नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

डिजिटल अरेस्ट : सुप्रीम कोर्ट का सख्त रुख सही

साइबर ठगी का दायरा जितनी तेजी से बढ़ रहा है, उससे कहीं अधिक खतरनाक है उसका तरीका. 'डिजिटल अरेस्ट' नामक नया साइबर अपराध अब केवल तकनीक का दुरुपयोग नहीं, बल्कि लोगों की मानसिक, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा पर सीधा हमला बन चुका है. सुप्रीम कोर्ट ने इस बढ़ते खतरे को गंभीरता से लेते हुए जो कड़ा रुख अपनाया है, वह न सिर्फ समय की मांग है, बल्कि देश की साइबर सुरक्षा व्यवस्था के सामने एक महत्वपूर्ण चेतावनी भी है. बहरहाल, देशभर में तेजी से बढ़ते मामलों के बीच सोमवार को कोर्ट ने सीबीआई को इस पूरे मामले की व्यापक जांच सौंपते हुए संकेत दे दिया कि अब इस राष्ट्रीय स्तर की ठगी पर आधे-अधूरे कदम नहीं चलेंगे. यह कदम इसलिए भी अहम है क्योंकि इस स्कैम का नेटवर्क देशों की सीमाओं को पार कर चुका है, और इसके धागे अंतरराष्ट्रीय साइबर गिरोहों तक जाते हैं. डिजिटल अरेस्ट स्कैम में जालसाज सरकारी एजेंसियों के नाम पर वीडियो कॉल करते हैं, खुद को सीबीआई,ईडी, एनसीबी या पुलिस अधिकारी बताते हैं और पीड़ितों को यह विश्वास दिला देते हैं कि उनका आधार नंबर या फोन किसी गंभीर अपराध में इस्तेमाल हुआ है. डर की इस मनोवैज्ञानिक गिरफ्त में फंसाकर पीड़ितों को वीडियो कॉल पर बंधक बनाया जाता है,मानो वे वाकई हिरासत में हों. यह सिर्फ तकनीकी धोखाधड़ी नहीं, मानसिक उत्पीड़न का आधुनिक रूप है.

इस ठगी का सबसे दर्दनाक पहलू है कि इसमें अधिकतर निशाना वरिष्ठ नागरिक बनते हैं. समाज का यह वर्ग तकनीकी जटिलताओं से पूरी तरह परिचित नहीं होता, और भय दिखाकर उनसे जीवनभर की कमाई निकलवा लेना आज के साइबर अपराधियों का सबसे आसान तरीका बन चुका है. सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को विशेष अधिकार देकर राष्ट्रीय स्तर पर दर्ज सभी मामलों की एकीकृत जांच का आदेश दिया है. यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अलग-अलग राज्यों में दर्ज मामलों का एक-दूसरे से कोई समन्वय नहीं होता, जिससे अपराधी कानून के शिकंजे से बच निकलते हैं. कोर्ट ने यह भी कहा कि यदि बैंक अधिकारियों की मिलीभगत सामने आती है, तो उनके खिलाफ भी कार्रवाई होगी. साइबर ठगी में 'म्यूल अकाउंट्स' की भूमिका सबसे निर्णायक होती है, और इन खातों का खुलना बिना बैंकिंग सहायता के संभव ही नहीं. सुप्रीम कोर्ट ने आरबीआई से पूछा है कि जब दुनियाभर में बैंकिंग क्षेत्र फर्जी लेन-देन पकड़ने के लिए एआई का उपयोग कर रहा है, तो भारत पीछे क्यों है? यह सवाल केवल आरबीआई से नहीं, बल्कि पूरे वित्तीय तंत्र से पूछा गया है,क्या हमारे बैंकिंग सिस्टम को आधुनिक खतरों की समझ है?

दूरसंचार विभाग को भी सख्त निर्देश दिए गए हैं कि एक ही व्यक्ति को कई सिम देने की प्रवृत्ति तुरंत रोकी जाए. हजारों फर्जी सिम कार्डों का इस्तेमाल कर साइबर गिरोह देशभर में लोगों को फंसाते हैं. यह नियंत्रण जितना तकनीकी है, उतना ही प्रशासनिक. कोर्ट ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना सहित सभी राज्यों को सीबीआई से पूर्ण सहयोग देने को कहा है. साइबर अपराध राज्य सीमाओं के भीतर बंद नहीं रहते, इसलिए केंद्र-राज्य एजेंसियों का समन्वय ही जांच की सफलता तय करेगा. कुल मिलाकर डिजिटल अरेस्ट स्कैम यह बता चुका है कि तकनीक जितनी उपयोगी है, उतनी ही खतरनाक भी हो सकती है. कानून अपना काम करेगा, ऐजेंसियां कार्रवाई करेंगी, परंतु नागरिकों को भी सतर्क रहना होगा. किसी भी सरकारी एजेंसी का अधिकारी वीडियो कॉल पर गिरफ्तारी नहीं करता, न ही किसी सुरक्षित खाते में पैसा ट्रांसफर करवाता है. सुप्रीम कोर्ट की पहल निश्चित रूप से राहत देती है,लेकिन इस नई साइबर लड़ाई में सजग नागरिक ही सबसे मजबूत कड़ी साबित होंगे.

समान काम समान वेतन कानून लागू किया जाए

सरकारी कर्मियों पर विशेष कृपा किसलिए ?

केंद्र सरकार में करीब 10 लाख और राज्य सरकारों में करीब 1 करोड़ स्वीकृत पद खाली पड़े हैं. आज केंद्र और राज्य सरकार के हर महकमे में स्थायी और कॉन्ट्रैक्चुअल कामगारों की एक समानांतर कार्य व्यवस्था चल रही है. सरकार इस पर एक स्पष्ट नीतिगत स्थिति नहीं बना पाई है. सरकार देश में इस बात को सुनिश्चित करे कि एक समान कार्य-एक समान वेतन, एक समान योग्यता एक समान वेतन, एक सेवा काल- एक समान पेंशन समाज में स्थापित हो जिससे देश में असमानता की खाई को और चौड़ी होने से रोका जा सके.

भारत सरकार ने अपने पहले से बनाए चार श्रम कानून कानूनों को अधिसूचित करने का जो फैसला किया है, उससे देश में श्रम, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को लेकर वर्षों से सवाल उभर आए हैं. ये सभी सवाल और प्रासंगिक हो गए हैं, क्योंकि अगले महीने यानी जनवरी 2026 से आठवें वेतन आयोग की अनुशंसा लागू की जाएगी. ऐसे में बड़ा सवाल ये है कि जब एक देश-एक चुनाव, एक देश-एक विधान की बात की जा रही है तो देश की सभी आबादी के व्यापक हितों को लेकर सरकार अपना व्यापक दृष्टिकोण और कार्य योजना क्यों नहीं प्रदर्शित कर रही है?

हमारी अर्थव्यवस्था घोषित और व्यावहारिक दोनों तौर पर सरकारी क्षेत्र और निजी क्षेत्र के दो स्तंभों पर चल रही है. सवाल उत्पन्न होता है कि हर दस साल में वेतन आयोग गठित कर सरकार देश में केवल 55 लाख सरकारी कर्मचारियों और करीब 75 लाख सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पेंशन को लेकर उन्हें विशेष ट्रीटमेंट क्यों प्रदान कर रही है? यदि ये आबादी हकदार है तो क्या देश के और कामगार, मजदूर या कर्मचारी इस प्रावधान के पात्र नहीं हैं? राज्यों की बात करें तो उनकी आर्थिक हैसियत केंद्र जैसी मजबूत नहीं है, लेकिन उन पर भी अपने कर्मचारियों के लिए केंद्रीय वेतनमान देने का दबाव पड़ता है. कई बार केंद्रीय वेतनमान देने में राज्यों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है. दूसरा सवाल ये है कि निजी उपक्रमों में श्रम कल्याण के तमाम प्रावधानों को उनकी अपनी मनमानी पर क्यों छोड़ दिया जाता है. निजी क्षेत्र में निचले यानी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का वेतन सरकार की तुलना में कम होता है जबकि प्रथम या ऊंची श्रेणी के कर्मचारियों का वेतन सरकार की तुलना में ज्यादा होता है. सरकार में कार्यरत स्थायी कर्मचारी जहां शत-प्रतिशत संगठित श्रमशक्ति के दायरे में आते हैं. वहीं निजी क्षेत्र में चंद संस्थानों की श्रमशक्ति ही संगठित क्षेत्र के दायरे में है. केवल दस प्रतिशत निजी यानी बड़े कॉर्पोरेट समूहों को छोड़ दें तो अधिकतर जगह श्रम कानूनों के अनुपालन की स्थिति नहीं है. इस नए आर्थिक युग में जब निजी और सरकारी क्षेत्र के लिए एक समान लेवल प्लेइंग की बात की जाती है तो उस दौर में यह विभेद क्यों? केंद्र सरकार ने एक नीतिगत निर्णय लेकर 2004 के बाद जॉइन करने वाले कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पेंशन को सरकारी कोष से देना बंद कर दिया और उसे कर्मचारी योगदान अंश पर आधारित कर दिया गया पर अब कई राज्य सरकारें इसे राजनीतिक वोट बैंक समझकर अपनी आर्थिक स्थिति के प्रतिकूल जाकर उनके पेंशन की पुरानी सुविधा, जो आधे वेतन के बराबर है, उसे आजीवन प्रदान करने का वादा कर रही है.

देश में अभी ऐसे कई सेवानिवृत्ति सरकारी कर्मचारी हैं जो एक लाख माहवारी पेंशन पाते हैं जबकि देश के अधिसंख्य लोगों को कोई पेंशन नहीं मिलती. इस मामले में सरकार में भी जो स्थिति पनपी है, वह घोर चिंताजनक है. पिछले कई दशकों से सरकारी महकमे में जो पक्की नौकरी और उससे जुड़े विभिन्न श्रम कानूनों का कवच चला आता आया, उससे सरकार में अनुत्पादक कार्य माहौल, बढ़ता वित्तीय बोझ और श्रम बाजार की बेहद असंतुलित परिस्थितियां उत्पन्न हुई. इसका कोई स्थायी नीतिगत हल न निकालकर सभी सरकारें चाहे केंद्र में हो या राज्यों में हो, सभी ने इस पर चुप्पी साधे रखी और उन्होंने सरकारी नियुक्ति ही कम कर दी. आज स्थिति ये है कि भारत में प्रति हजार आबादी पर सरकारी नौकरी की संख्या महज 17 है जबकि चीन में 55 और पूंजीवादी देश अमेरिका में 77 है.

-मनोहर मनोज

सदियों की वेदना को मिला विराम

शिखर पर सनातन

विजय कुमार झा

भारत सहित पूरे विश्व के सनातन धर्मावलंबियों के लिए 25 नवम्बर, 2025 का दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि चिरस्मरणीय आस्था की विजय का महामुहूर्त बन गया. राम-जानकी विवाहोत्सव यानी विवाह पंचमी के ऐतिहासिक दिवस पर प्रभु श्री राम की पावन जन्मभूमि अयोध्या में नवनिर्मित भव्य मंदिर के शिखर पर जब केसरिया धर्मध्वज गर्व से लहरा उठा, तो यह केवल एक ध्वजारोहण नहीं था— यह सदियों की वेदना को विराम देने वाला, एक राष्ट्र के अटूट संकल्प और सामूहिक स्मृति का साक्षी बना दैवीय क्षण था. वैदिक मंत्रों की गूंज, जय श्रीराम के उद्घोष और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत की उपस्थिति में हुई यह आराधना व्यक्तिगत श्रद्धा से ऊपर उठकर राष्ट्र के सांस्कृतिक स्मरण का साझा अनुष्ठान बन गई. करोड़ों रामभक्तों में जो अद्वितीय संतोष, असीम कृतज्ञता और अपार अलौकिक आनंद व्याप्त था, वह 500 वर्षों के संघर्ष, साधना और बलिदान का प्रतिफल था.

संघर्ष से उत्कर्ष... बलिदान, धैर्य और न्याय की मिसाल- राम मंदिर का निर्माण केवल सीमेंट और पत्थरों का संयोजन नहीं है, बल्कि यह न्याय, धैर्य और अटल विश्वास का सबसे सशक्त मानवीय दस्तावेज है. सदियों के संघर्ष में असंख्य रामभक्तों ने कठोर यातनाएं सहीं और अपना सर्वोच्च बलिदान दिया. उनका श्रम, उनका त्याग, उनकी तपस्या उस 'यज्ञकुंड' की तरह थी, जिसकी अग्नि एक पल भी आस्था से डिगी नहीं. अंततः, सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले ने भारत के दृढ़ न्यायिक चरित्र को स्थापित किया. यह मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की उस ताकत का प्रतीक है, जहां न्याय की धीमी चाल भी सत्य की विजय सुनिश्चित करती है. आज सदियों के घाव भरने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और सामूहिक संकल्प ने सिद्धि को प्राप्त कर लिया है. मंदिर के चारों ओर निर्मित परकोटा, मुख्य मंदिर की दीवारों पर उकेरे गए रामकथा के 87 प्रसंग और समृद्ध कॉपर-शिल्प की झांकियां— यह केवल स्थापत्य कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि हमारी परंपरा की बहुरंगी विविधता और रामकथा के बहुआयामी दर्शन का मूर्त रूप हैं.

अयोध्या - मर्यादा की विरासत, समरसता की प्रेरणा- अयोध्या केवल एक नगरी नहीं, यह भारतीय सभ्यता, संस्कृति और मर्यादा का हृदय है. यह सहस्त्रों वर्षों पुरानी इक्ष्वाकु वंश की राजधानी और मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि रही है. गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस का यह केंद्र बिंदु है, जिसने भारतीय समाज को प्रेम, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा के मूल्यों से बांधे रखा है. अयोध्या की विरासत हमेशा समरसता की प्रेरणा रही है. यह वह भूमि है, जहां निषादराज की मित्रता, मां शबरी की ममता और गिलहरी जैसे छोटे प्राणी का सहयोग भी महान माना गया. यह नगरी हमेशा भेदभाव से नहीं, भाव से जुड़ने का संदेश देती रही है. राम मंदिर की पूर्णता के साथ अयोध्या फिर से विश्व के लिए एक सांस्कृतिक प्रेरणा स्त्रोत बनकर उभर रही है.

विकास और अध्यात्म का आदर्श- आज की अयोध्या विकास और आध्यात्म का नया मॉडल प्रस्तुत कर रही है. महर्षि वाल्मीकि हवाई अड्डे, आधुनिकीकरण किए गए रेलवे टर्मिनलों, रामपथ और भक्ति-पथ तक — ये सब उस दृष्टि का हिस्सा हैं, जो तीर्थ को वैश्विक रूप से सुलभ, सुरक्षित और आदर्श-आधारित बनाने की कल्पना करती है. अयोध्या आज इस बात का उदाहरण है कि विरासत और विकास साथ-साथ फल-फूल सकते हैं.

भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने भावुक संबोधन में इस क्षण को भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज बताया. उन्होंने मंदिर को देश के सामूहिक सामर्थ्य की चेतना स्थली करार दिया और स्पष्ट किया कि यह ध्वज सैकड़ों वर्ष के अरसे से बंधी हुई वेदना का प्रतीक है. प्रधानमंत्री ने कहा कि देश को आगे बढ़ने के लिए अपनी विरासत पर गर्व करना होगा. कोविदार वृक्ष की पुनः प्रतिष्ठा गुलामी की मानसिकता से मुक्ति की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसने प्रभु राम को भी काल्पनिक घोषित करने का प्रयास किया था. उन्होंने राम के व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए कहा कि राम केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक मूल्य, एक मर्यादा और एक दिशा हैं. राम यानी- धैर्य और क्षमा का दरिया; राम यानी- ज्ञान और विवेक की पराकाष्ठा. इस पवित्र क्षण पर, प्रधानमंत्री ने प्रभु राम के आदर्शों से प्रेरित होकर विकसित भारत (2047) के निर्माण का संकल्प दोहराया. उन्होंने रामचरितमानस के माध्यम से शौर्य, धैर्य, सत्य और परोपकार को उस रथ के पहिए और घोड़े बताया, जिसकी लगाम क्षमा और करुणा है.

रोहित-कोहली ने दिखाया पराक्रम

रांची के इस एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच ने क्रिकेट प्रेमियों को हर्षित कर उनका उत्साह जगाया है. वन डाउन की पोजीशन पर कोहली क्रीज पर आए और खेल में जान डाल दी. खास बात यह भी है कि वनडे मैच में सर्वाधिक 352 छक्के लगाने का रिकार्ड रोहित शर्मा ने अपने नाम कर लिया.

विराट कोहली और रोहित शर्मा की जोड़ी ने फिर साबित कर दिया कि ओल्ड इज गोल्ड! टेस्ट सीरीज में शर्मनाक हार से क्रिकेट प्रेमियों में जो मायूसी छा गई थी उसे वन डे इंटरनेशनल मैच में इन खिलाड़ियों ने मुस्कान में बदल दिया. सबसे बड़ी बात यह हुई कि उन्होंने यह भ्रम तोड़ दिया कि द. अफ्रीका अजेय है. अब बीसीसीआई को गंभीरतापूर्वक सोचना होगा कि ये खिलाड़ी अपने पसंदीदा फॉर्मेट में आने वाले वर्षों तक शान से खेलते रहें. यह कोई मामूली बात नहीं है कि कोहली और रोहित शर्मा ने 352 मैचों में अपनी जोड़ी कायम रखकर सचिन तेंदुलकर व राहुल द्रविड़ का अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने का रिकार्ड तोड़ दिया. 36 वर्षीय कोहली ने 120 गेंदों पर 11 चौके व 7 छक्के मारकर तेजी से 135 रनों का अंबार लगा दिया और दिखा दिया उन्हें लोग किंग कोहली यूं ही नहीं कहते. रांची के इस एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच ने क्रिकेट प्रेमियों को हर्षित कर उनका उत्साह जगाया है. वन डाउन की पोजीशन पर कोहली क्रीज पर आए और खेल में जान डाल दी. खास बात यह भी है कि वनडे मैच में सर्वाधिक 352 छक्के लगाने का रिकार्ड रोहित शर्मा ने अपने नाम कर लिया. उन्होंने पाकिस्तान के शाहिद अफरीदी को पीछे छोड़ दिया. रोहित और कोहली ने 15 वर्षों में 102 पारियां साथ खेलीं तथा अपनी इस भागीदारी में 20 शतक तथा 17 अर्धशतक सहित 5619 रन बनाए. जिस अंदाज में यह जोड़ी रांची के मैच में खेली उससे उनके वनडे इंटरनेशनल मैच से रिटायरमेंट की अटकलों की धज्जियां उड़ गईं. अब ओडीआई मैचों में यह जोड़ी तीसरे स्थान पर है. सौरभ गांगुली और सचिन तेंदुलकर की जोड़ी ने 8227 रन बनाए थे तो जयवर्धने व संगकारा की जोड़ी ने 5992 रन बनाए थे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चीफ जस्टिस ने बात समझाई अपना लोकतंत्र है चारपाई!

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने लोकतंत्र या डेमोक्रेसी की बहुत अच्छी स्वदेशी व्याख्या की है. उन्होंने इसे चारपाई के समान बताया जिसमें मजबूत लकड़ी का फ्रेम या चौखट, टिकाऊ पाए और लचीली लेकिन मजबूत रस्सियों का ढांचा रहता है. यह ऐसा ढांचा या स्ट्रक्चर है जो कड़ा भी है और लचीला भी! इस व्याख्या पर आप अपनी राय बताइए.'

हमने कहा, 'चारपाई या खटिया आराम करने के लिए होती है. लोकतंत्र जीवंत और क्रियाशील तभी बनेगा जब वह चारपाई छोड़कर उठ जाए. चारपाई या खटिया रात में उपयोगी है. सुबह उठते ही इसे खड़ा कर देना चाहिए. चुनाव में जब कोई पार्टी बुरी तरह हार जाती है तो कहते हैं कि जनता ने उसकी खटिया खड़ी बिस्तरा गोल कर दिया. इन दिनों ठंड का मौसम चल रहा है. गोविंदा की एक फिल्म का गाना था- सरकाय लेव खटिया जाड़ा लगे, जाड़े में बलमा प्यारा लगे!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप चीफ जस्टिस के कथन का मर्म नहीं समझे, इसीलिए ऐसी बहकी बहकी बातें कर रहे हैं. चारपाई के समान लोकतंत्र के 4 पाए होते हैं. यह हैं कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका के अलावा स्वतंत्र व निष्पक्ष प्रेस. चीफ जस्टिस ने चारपाई में बुनी जाने वाली रस्सी का उल्लेख किया. राजनीति में पार्टियों के बीच रस्साखींच की प्रतियोगिता चलती रहती है जिसे अंग्रेजी में टग ऑफ वॉर कहते हैं. बड़े ही सारतत्व के साथ चीफ जस्टिस ने चारपाई का उदाहरण देकर मजबूत ढांचे के बारे में बताया है. हमारे संविधान में चाहे जितने भी संशोधन कर लिए जाएं लेकिन उसका मूल ढांचा अपरिवर्तित रहेगा. यह ढांचा स्वतंत्रता, समानता व भ्रातृभाव अर्थात लिबर्टी, इक्वलिटी और फ्रैटर्निटी से बना है. यह बहुत मजबूत फ्रेमवर्क है. केशवानंद भारती केस से इस मूलभूत ढांचे या बेसिक स्ट्रक्चर की पुष्टि हुई थी. इससे आदर्शवाद और शक्ति के बीच संतुलन परिभाषित हुआ था. अब बताइए कि आप चारपाई का अर्थ ठीक से समझे या नहीं?'

हमने कहा, 'जनता को चारपाई की उपयोगिता अच्छी तरह से मालूम है. मोदी की चाय पे चर्चा का जवाब देने के लिए कांग्रेस ने 'खाट पे चर्चा' शुरू की थी. जहां भी राहुल गांधी की सभा होती थी वहां सैकड़ों खटिया बिछा दी जाती थीं. सभा खत्म होते ही पब्लिक यह खटिया उठाकर सीधे अपने घर ले जाती थे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12099

-डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		4	■	5	6
7			■	8			
	■	9	10		■		■
	■	11		■	12	■	13
■	14	■	■	15		■	
16		17	18	■	■	19	
	■	20		21	22	■	
23			■	24			

बाएं से दाएं

1. देखने योग्य (सं.) 5. बादशाह, मुसलमान फकीर (उर्दू) 7. आकाश 8. मतवाला, नशे में मस्त 9. सोने-चांदी या कांसे का बना गोल टुकड़ा जो किसी विशेष कार्य करने पर उपहार के रूप में दिया जाता है 11. रह-रहकर उठने वाला दर्द, कसक 15. रात 16. भव्य (उर्दू) 19. चूहे की आकृति का बड़ा जंतु, रिश्वत 20. बंधा हुआ क्रम (उर्दू) 23. सलाख, सलाई (सं.) 24. उच्च स्वर से युद्ध के लिए आव्हान, लड़ने का बढ़ावा

ऊपर से नीचे

1. आना, आमद 2. जनता, आसपास के सब मनुष्य 3. कान और आंख के मध्य का स्थान 4. एक शब्दालंकार जिसमें एक ही शब्द कई बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आता है (सं.) 5. विपत्ति, दुर्भाग्य, घिरने के लक्षण, मुसीबत (उर्दू) 6. हाथ, हाथी की सूंड (सं.) 10. हजार का सौ वां हिस्सा 12. झगड़ा खड़ा करने वाली बात, व्यंग्य, निकली हुई नोक (उर्दू) 13. अश्वारोही 14. चंडी, एक नाग जिसे यमुना में श्रीकृष्ण ने मारा था 16. कोसना, रोष, कर्कश स्वर में की जाने वाली भर्त्सना (सं.) 17. शासन करने वाली 18. श्रीराम की सेना का एक बंदर, पोली लंबी गोल वस्तु 21. पत्थर का चौकोर पहिया जो मसाला आदि पीसने के काम आता है 22. सुर्ख, रक्त के रंग का

Solution 12098

अ	नु	प	मि	त	■	ता	ना
ल	की	र	■	मा	न	वी	य
ल	ला	■	का	श	■	ज	ब
ब	■	अ	बा	बी	ल	■	■
छे	ड़	ना	■	न	ट	ख	ट
हा	■	मि	र्च	■	प	ल	क
■	मौ	का	■	मो	टा	■	■
सौ	त	■	ख	ल	ना	य	क

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी. सुख प्राप्त होगा. नवीन मित्र से भेंट होगी. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी. वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष ओर वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, परोपकारी, मिलनसार होगा, इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी, किसी विशेष विद्या का ज्ञाता होगा. इनके मित्रों की संख्या अधिक होगी, सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यो में इनकी रूचि रहेगी. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, आकस्मिक धन लाभ से समस्या का समाधान होगा. पारिवारिक आकांक्षाओं की पूर्ति होगी. आमोद प्रमोद पर खर्च होगा.

वृषभ- नई जिम्मेदारी आने से आप परेशान हो सकते हैं, वाद विवाद से बचना चाहिये, उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु बाधाएं दूर होंगी.

मिथुन- युवाओं को बेहतर सफ्लता मिलेगी, कार्यक्षेत्र में विपरीत हालात पैदा होंगे, संतान पक्ष के कारण भावनात्मक कष्ट होगा, रचनात्मक कार्यो में रूचि रहेगी.

कर्क- किसी के सहयोग से अटका कार्य आसानी से बन जायेगा, कोर्ट कचहरी के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, किसी सदस्य की अस्वस्थ्यता के कारण चिन्ता हो सकती है.

सिंह- नाराज चल रहे लोगों को मनाना पडेगा, दिखावेके कारण खर्च में वृद्धि होगी, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें.

कन्या-पारिवारिक आयोजन प्रसन्नता दायक रहेंगे, जोखिम के कार्यो से दूर रहें, नवीन वस्त्राभूषण उपहार आदि की प्राप्ति होगी. संपत्ति विवाद को टालना हितकर रहेगा.

तुला- सार्वजनिक जीवन में मान सम्मान मिलेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, भ्रमण मनोरंजन में खर्च होगा. धार्मिक यात्रा का योग है.

वृश्चिक- मित्रों से कहासुनी का मलाल रहेगा, अटकी योजना फिर शुरू हो सकती है, संपत्ति के कार्यो पर व्यय होगा. योजनाओं की रूपरेखा बनेगी.

धनु- दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, शादी विवाह की चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा, निजी प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

मकर- मेहमान के आने से कार्यक्रम बदल सकता है, निजी कार्यो पर ध्यान दें, आजीविका के प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, दायित्वों की पूर्ति होगी.

कुम्भ- काम को टालने का प्रयास न करें, स्वतः के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, धार्मिक कार्यो के प्रति रूचि रहेगी, वरिष्ठजनों के सहयोग से कार्य बनेगा.

मीन- धीमी गति के बावजूद कार्यक्षेत्र में अच्छी सफ्लता मिलेगी, पारिवारिक विवादों में विजय प्राप्त होगी. कार्यो के प्रति लगन और रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

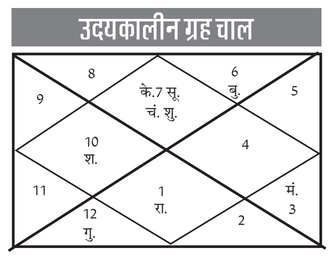

पंचांग

रा.मि. 12 संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी बुधवासरे दिन 10/2, भरणी नक्षत्रे शाम 4/46, परिघ योगे शाम 4/24, तैतिल करणे सू.उ. 6/44, सू.अ. 5/16, चन्द्रचार मेष 10/21 रात से वृषभ, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, गेहूँ, चना, नमक, रूई, चांदी के भाव में मंदी होगी, सोना-चांदी में विशेष मंदी होगी. जीरा, धनियां के भाव पूर्ववत रहेंगे. आज 11 बजकर 10 मिनिट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 2131 है.

SUDOKU 7231

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7230

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4